अगुवों की ओर से संदेश

पवित्र आत्मा हमारे बीच कार्य कर रहा है

जीएएसएन और जीएमएफ के सदस्य विश्व के विशाल मानचित्र के चारों ओर केन्या की सभा के दौरान। फोटो: बार्बरा हेगे–गाल्ले

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: सोमवार, 20 अगस्त, 2018

एक हृदय के कक्षों के समान, एमडब्लयूसी के चार कमीशन ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के वैश्विक समुदाय की सेवा चार क्षेत्रों में करते हैं: डीकन, फेथ एण्ड लाइफ, पीस, मिशन। इन कमीशनों द्वारा जनरल कॉउंसिल के विचार विमर्श के लिए विषय तैयार किए जाते हैं, सदस्य कलीसियाओं को मार्गदर्शन और संसाधनों का प्रबन्ध किया जाता है, और सामान्य हितों और लक्ष्यों के मामलों में एमडब्लयूसी से सम्बन्धित नेटवर्कों (तंत्रों) या सहभागिताओं को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। निम्नलिखित लेख में अपनी सेवकाई के प्रकाश में एक संदेश प्रस्तुत किया है।

समाज सेवा में लगे हुए मसीही लोग सामान्यतः व्याव्हारिक, ध्यान रखनेवाले, और कदम उठाने वाले लोग होते हैं। यह सत्य है, कि समाज सेवा करने के पीछे यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं का अनुसरण, निर्बलों, अनाथों और विधवाओं की सुधि, इत्यादि प्रेरणा के रूप में शामिल हैं (यिर्मयाह 22:3; याकूब 1:27)।

जिन लोगों को सुसमाचार प्रचार का बोझ मिला है उन्हें प्रचार करने वाले लोग कहा जा सकता है। उन्हें यह बोझ मिला है कि वे लोगों को यीशु के बारे में बताएं। वे सारे जगत में जाकर प्रचार करने, और सिखाने और चेला बनाने की आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

जब पहले प्रकार के लोगों पर लोगों की आत्माओं की चिन्ता न करने का दोष लगाया जाता है, तो वे यह कहते हैं, कि हमें आत्मिक भोजन देने से पहले भूखे पेट को तृप्त करना है।

दूसरे वर्ग के लोग शायद यह कहेंगे, ''यदि हम नाश हो रही आत्मा के लिए कुछ नहीं कर पाएं तो लोगों को भोजन देने का क्या फायदा?''

मैं जानता हूँ कि उपरोक्त बातें कुछ बढ़ा चढ़ा कर कही गईं हैं और दोनों वर्गों के एकतरफा पक्ष को सामने रखा गया है, परन्तु मेरे अनुभव के आधार पर, इसमें कुछ सच्चाई भी है।

एक तनाव

अतीत में, मैंने इन दो समूहों के बीच एक तनाव का अनुभव किया: प्रचार करने वाले लोग और कदम उठने वाले लोग। दोनों ही अपने अपने मिशन को पूर्ण मानते हैं। कभी कभी दोनों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अक्सर एक दूसरे पर काफी दोष लगा दिया जाता है।

जब हमने मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस के तहत ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट सर्विस नेटवर्क की स्थापना की, तो इस बात पर काफी चर्चा हुई कि इसे किस कमीशन के आधीन लिया जाए: मिशन या डीकन्स। दोनों पक्षों में हुई बहस ने सीधे सीधे तनाव को सामने ला दिया।

यह निर्णय लिया गया कि इसे मिशन कमीशन के आधीन रखा जाए। इस निर्णय के समर्थन में प्रचार कार्य और समाज सेवा – वचन और कर्म – के बीच की खाई को भरने के इच्छा दर्शायी गई।

मैं बहुत खुश नहीं था। जीएएसएन के समन्वय समिति के एक सदस्य के रूप में, मेरा नाम मिशन कमीशन में एक विशेषज्ञ के रूप में सामने लाया गया। मुझे नहीं लगता कि मैं एक मिशनरी (सुसमाचार प्रचारक) हूँ। मैं एक सेवक (समाज सेवक) हूँ। अब मुझे मिशन के साथ खुद की पहचान बनानी होगी।

एक परिवर्तन

आरम्भ में मैं स्पष्ट नहीं था। परन्तु जैसे जैसे समय बीतता गया, मैंने यह पाया कि मेरे भीतर एक परिवर्तन हो रहा है। मैं यह देख सका कि एक सेवक के रूप में मेरे वरदान उन दूसरों लोगों के वरदानों के बराबर ही महत्व रखते हैं जो कलीसिया स्थापना, सुसमाचार प्रचार, और बाइबल की शिक्षा देने का कार्य करते हैं।

परमेश्वर हम सबको अपने मिशन में शामिल करना चाहता है। एक साथ मिलकर ही हम पूर्ण हो सकते हैं।

उस समय से, जीएएसएन की दो बार बैठकें हुई है। ग्लोबल मिशन फैलोशिप के साथ हमारी संयुक्त बैठकें हुईं जिसमें हमने दोनों समूहों के साथ मिलकर गवाहियों और शिक्षाओं को एक दूसरे के साथ बांटा, और साथ ही दोनों समूहों के साथ अलग अलग भी मिले।

विशेष रूप से तब, जब दोनों समूह अलग अलग मिले, मैंने यह पाया कि अब भी हमें आत्मा के द्वारा सिखाए जाने की आवश्यकता है: यह कि हम एक साथ मिलकर अपने अपने वरदानों, विश्वास, और दृष्टिकोणों के अनुसार परमेश्वर के मिशन में कार्य करने को बुलाए गए हैं।

परमेश्वर की श्वास (''आत्मा'' और ''श्वास'' दोनों एक ही इब्रानी शब्द *रूआक* का अनुवाद हैं) से सामर्थ पाकर, हम परिवर्तन को देखेंगे और परमेश्वर को कार्य करते हुए देखेंगे।

अप्रैल 2018 में, केन्या की सभाओं के दौरान, मेरे लिए उस एकता का एक चिन्ह प्रार्थना मानचित्र था (तस्वीर देखें)। जीएमएफ और जीएएस सदस्यों को आव्हान किया गया कि वे किसी एक देश को चुने, वहाँ एक मोमबत्ती रखें और उस देश के लिए प्रार्थना करें, वहाँ के लोगों के लिए या वहाँ के किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जिसे वे जानते हों।

उसे बड़े मानचित्र के चारों ओर मौन प्रार्थना की इस अवधि के दौरान एक बात बिल्कुल स्पष्ट थी: आत्मा में हम सब एक हैं।

एमडब्ल्यूसी के लिए बारबरा हेगे–गाल्ले, मिशन कमीशन की एक सदस्या द्वारा जारी विज्ञप्ति। उन्होंने 32 वर्ष तक ख़ाइस्ट लाइक डियनस्टे में सेवकाई किया और बाम्मेंटल जर्मनी में निवास करती हैं। वे वहाँ की स्थानीय कलीसिया में भी सेवकाई देती हैं।